पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 111-113

खासी लोककथा

का पुङ वेइक्यान[1]

✍ संग्रह एवं हिन्दी अनुवाद : एहसिंग खिएवताम

मेघालय के पूर्वी खासी पहाड़ी जिला के पेनुर्स्ला खंड में उम्न्युह् त्मार नामक एक गाँव है। यह गाँव बांग्लादेश की सीमा में स्थित है। यहाँ के ग्रामीणों में आज भी बहुत ही मेहनती तथा फुर्तीला युवक उ रेन् के बारे में एक लोककथा प्रचलित है। यह लोककथा आज भी गाँव वाले अपनी अगली पीढ़ी को सुनाते आये हैं। कहा जाता है कि कई वर्षों पूर्व 'उ रेन्' नामक युवक इस ग्राम में अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहता था। प्रतिदिन खेत-बागानों में काम करके शाम को घर लौटता था। इसी प्रकार रेन् की दिनचर्या होती थी। एक दिन कड़ाके की धूप हो रही थी तथा रेन् को खेत में काम करते-करते थकावट का अनुभव हो रहा था। तभी रेन् खेत का काम छोड़कर पास के वेइक्यान नदी की ओर मछली पकड़ने एवं विश्राम करने जाने लगा। जब वह मछली पकड़ने में व्यस्त था तभी एकाएक उसकी दृष्टि नदी के दूसरी छोर पर गयी। एक अप्सरा-सी युवती नहाकर धूप में आराम कर रही थी। उसके मुखमंडल पर अद्भुत तेज था, वह अद्वितीय सुंदरता से शोभित थी, नदी की रानी सी प्रतीत हो रही थी। रेन् कुछ देर के लिए उस अद्वितीय सुंदरता को अवाक देख रहा था। क्योंकि उसके नदी में आने के क्रम में आज पहली बार कोई युवती इस सुनसान नदी में अकेली नहाने आयी थी। आश्चार्यवश रेन् झट से नदी के उस पार चला गया और उस सुंदर युवती से पूछताछ करने लगा। दोनों ने पर्याप्त समय तक बातें की। दोनों आपस में सहज अनुभव कर रहे थे। उनके ह्रदय में एक दूसरे के लिए प्रेम उत्पन्न हो रहा था, तभी युवती ने रेन् से कभी उसके एवं उसकी भावना के साथ छल न करने का वचन लिया एवं उसे अपने घर ले जाने को सहमत हो गयी। रेन् तुरंत ही उस सुंदरी के वचन को मान उसके साथ उसके घर चलने को तैयार हो गया। सुंदरी ने अपने दोनों हाथों से नदी के पानी को अलग कर अपने घर के द्वार तक का रास्ता खोल दिया था। रेन् की आँखों को यह घटना पहली बार अनुभव करने का अवसर प्राप्त हो रहा था तथा उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। नदी

के अंदर प्रवेश करते ही पानी अपने आप फिर से जुड़ने लगा। सुंदरी का घर बहुत ही सुंदर था, साज-सज्जा का कोई दूसरा उदाहरण नहीं था। रेन् उस चकाचौंध में खोने लगा था। कुछ देर सुंदरी के साथ रहने के बाद अचानक उसे अपनी माँ का ध्यान हो आया तथा वह अपनी माँ से मिलने के लिए व्याकुल हो रहा था। अपनी सुंदरी को वापस आने का वचन देकर रेन् वहाँ से चलने लगा।

अपने बेटे को घर लौटते देख उसकी माँ खुशी से समा नहीं पा रही थी। वे रेन् को अपने सीने से लगाकर चूमने लगीं। उनकी आँखों से आँसू निरंतर प्रवाहित हो रहा था। यद्यपि रेन् की माँ कुछ हैरान भी थी क्योंकि रेन् की खोज गाओनवालों ने निरंतर तीन दिनों तक की थी। रेन् अपनी सुंदरी के घर तीन दिन तक रहा था इसकी सुध उन्हें तनिक भी नहीं था। माँ बहुत खुश थीं। रेन् अपनी माँ से सारी घटना का जिक्र करने लगा तथा अपनी माँ से उसकी बहू की पहली बार घर आने की तैयारी करने के लिए भी अनुरोध करने लगा। रेन् ने अपनी माँ को यह विशेष सूचना भी दी कि जब उसकी बहू घर में प्रवेश करे तो उसकी दृष्टि में घर का झाड़ू नहीं आना चाहिए। रेन् की माँ वृद्धा थीं। माँ ने अपनी सभी सहेलियों को तैयारी में सहायता करने के लिए बुलाया। तुरंत ही घर की साफ-सफाई, सजावट में सब व्यस्त होने लगे थे।

अंततः वह दिन भी आ ही गया जिसकी प्रतीक्षा रेन् की माँ के साथ-साथ सारे गाओनवाले भी उत्सुकता से कर रहे थे। रेन् की पत्नी का गाँव में आते ही गाओनवाले उसे अवाक होकर देखने लगे। उन्होंने अपने सपने में भी ऐसी सुंदर स्त्री की कल्पना नहीं की थी। लोगों में काना-पुसी होने लगी। लोग आपस में बातें करने लगे कि रेन् ने एक परी से विवाह किया है। रेन् की माँ बहुत ही खुश थीं। वे अपनी बहू का स्वागत करने लगीं। वे आगे-आगे चलकर बहू को अपने घर में प्रवेश करा रही थीं। अपनी सासु माँ के पीछे-पीछे चलकर बहू घर की चौखट तक पहुँच गयी थी। घर में प्रवेश करते ही उसकी दृष्टि द्वार के पास कोने में रखे झाड़ू पर पड़ी। आहत होकर वही से पीछे मुड़ गयी। पलटते ही रेन् से कहने लगी कि यदि वह चाहता है तो अपनी माँ के साथ रह सकता है, परंतु वह इस घर में क्षणभर भी रुक नहीं सकती और वह वहाँ से चलने लगी। रेन् धीरे-धीरे अपनी माँ के पास बढ़ा और उनसे अपनी पत्नी को दिया वचन से बद्ध होने की बात की। साथ ही खासी संस्कृति से बद्ध होने का एहसास भी अपनी माँ को दिलाने लगा। खासी परिवार का पुरुष अपनी पत्नी एवं उसके भावी संसार की रक्षा, भरण-पोषण एवं संवर्धन के लिए उसके साथ अथवा उसे लेकर अपनी माँ का घर छोड़ता है। वह अपनी माँ को दिलासा देकर कहने लगा कि यदि मैं जीवित रहूँ, तो वर्षा के ऋतु में

आपको 'वेइक्यान' नदी से अंगड़ाई नुमा गूँज सुनाई देगी। अतः यही गूँज मेरे जीवित होने का प्रमाण होगा। रेन् अपनी माँ को अंतिम बार सीने से लगाकर विदाई लेने लगा एवं अपनी पत्नी के घर चलने लगा। आज भी 'उम्न्यु-त्मार' एवं 'वेइक्यान' के गाँव वालों का मानना है कि वर्षा के ऋतु में रेन् की गूँज कभी-कभी सुनाई देती है।

शब्दार्थ:

1 वेइक्यान नदी

संपर्क-सूत्र:
लुमवशाइद,लोवर मावप्रेम,मेघालय, शिलांग
ई-मेल: ehsing23@gmail.com

पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका